# आलोचक के दृष्टि से गोदान का मूल्यांकन

**डॉ. निशा पटेल**
(नेट/जे.आर.एफ.)
अतिथि विद्वान (हिन्दी विभाग)
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

**सारांश-**प्रस्तुत आलोचनात्मक निबंध प्रेमचंद के महत्वपूर्ण उपन्यास "गोदान" के साहित्यिक महत्व और विविध आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। दस्तावेज़ स्पष्ट करता है कि "गोदान" (1936) हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन और किसान-चेतना का महाकाव्य है, जो महाजनी सभ्यता द्वारा शोषित भारतीय गांव की व्यथा को दस्तावेज़ीकृत करता है। निबंधकार रामचंद्र शुक्ल, बच्चन सिंह, डॉ. नगेंद्र, जैनेंद्र कुमार, रामविलास शर्मा, मीनाक्षी मुखर्जी और अन्य प्रमुख आलोचकों की विमर्शात्मक टिप्पणियों का समन्वय करता है। प्रमुख विषयों में शामिल हैं: किसान जीवन का यथार्थवादी चित्रण, होरी का त्रासद पात्र, नगर-ग्रामीण द्वैत, मार्क्सवादी विश्लेषण, संयुक्त परिवार का विघटन, और पूंजीवाद एवं सामंतवाद का संक्रमण काल। उपन्यास को पीढ़ीगत चेतना के अंतर (होरी बनाम गोबर) और प्रेमचंद की भविष्य-दृष्टि का प्रतीक माना गया है।

**बीज शब्द (Keywords)-**गोदान , किसान-चेतना, महाजनी शोषण, होरी,ग्रामीण यथार्थवाद, सामंतवाद का पतन, पूंजीवाद का उदय, नगर-ग्रामीण द्वैत, संयुक्त परिवार, जनसंस्कृति, मार्क्सवादी विश्लेषण, पीढ़ीगत चेतना, प्रेमचंद की भविष्य-दृष्टि.

**प्रस्तावना -** हमारे प्राचीन महाकाव्यों में,कथाओं में गाँव की, गाँव के किसान और उसकी भूमि की बात कम ही आती है, किन्तु हमारे देश में उपन्यास कला का आधुनिक काल में जो विकास हुआ उसमें शायद ही किसी गाँव के किसान या उसके भूमि प्रेम को याद न किया गया हो अतः आधुनिक काल के उपन्यासों का इसका श्रेय सम्राट प्रेमचंद को है। जीवन के पहलू की बात गोदान में की है, गोदान भारतीय गाँव और किसान जीवन की व्यथा का एक ऐसा दस्तावेज है, जो महाजनी सभ्यता के द्वारा शोषित है। प्रेमचन्द हिन्दी के महत्वपूर्ण कथाकार है। उनके साहित्य की समीक्षा का आरम्भ उनके लेखन के साथ ही हो गया था। आरम्भ में उनके उपन्यासों की समीक्षाएँ हिन्दी की महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। बाद में उनके कृतित्व से सम्बंधित अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई। हिन्दी के सभी प्रमुख आलोचकों ने प्रेमचन्द साहित्य पर लिखा है। इसके अलावा भारतीय विश्वविद्यालयों में उन पर अनेक शोध - कार्य हो चुके हैं। उनमें से बहुत प्रकाशित भी हुए हैं।

प्रकाशित होते ही गोदान (1936) को एक महत्वपूर्ण कृति मान लिया गया था। लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में उसकी समीक्षाएँ छपी, इसके पश्चात् भारत के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में गोदान को स्थान मिला, जो अब तक निर्विवाद रूप से बना हुआ है। इसलिए हिन्दी साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी गोदान तो पढ़ता ही है। गोदान एक ऐसी गाँव की व्यथा-कथा को प्रस्तुत करता है जो - "भारतीय उपन्यास मध्यवर्ग का महाकाव्य न होकर किसान चेतना की महागाथा है।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में प्रेमचन्द की कहानियों एवं उपन्यासों पर संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणी की है। परन्तु उन्होंने गोदान का उल्लेख नहीं किया है। शुक्ल जी कहते है-इस तृतीय उत्थान का आरम्भ होते-होते हमारे हिन्दी साहित्य के उपन्यास का यह पूर्ण विकसित और परिष्कृत स्वरूप लेकर स्वर्गीय प्रेमचन्द जी आये। द्वितीय उत्थान के मौलिक उपन्यासकारों में शीलवैचित्र्य की उद्भावना नहीं के बराबर थी। प्रेमचन्द जी के ही कुछ पात्रो में ऐसे स्वाभाविक ढाँचे की व्यक्तिगत विशेषताएँ मिलने लगी। प्रेमचन्द की-सी चलती और पात्रों के अनुरूप रंग बदलने वाली भाषा भी पहले नही देखी गयी थी। बच्चन सिंह "हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास" में कहते है - "वे अपने देश के किशानों की दयनीय जिन्दगी की खुशहाल जिन्दगी की खबरों में। वे अपने देश के किसानों की दयनीय जिन्दगी का सीधा साक्षात्कार करते हैं और 'गोदान' भारतीय किसानों का मर्मस्पर्शी, करुण और त्रासद दस्तावेज बन जाता है। किसानी संस्कृति को उजागर करने के लिए उन्होंने सबसे पहले किसानी भाषा का प्रयोग किया। विभिन्न वर्गों, जातियों की सांस्कृतिक जड़े उनकी भाषा में निहित होती है। होरी ही मृत्यु सहज-सरल ग्रामीण जीवन की भी मृत्यु है। शहर और गाँव के गरीबों की संस्कृति एक है। औद्योगिक सभ्यता गाँव के सामूहिक जीवन को नष्ट करती जा रही है। नृत्य, गीत से संबद्ध जन-संस्कृति को बड़े लोग घृणा करते है। प्रेमचन्द उसे जीवित रखने के पक्ष में है। डॉ. नगेन्द्र 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में 'गोदान' को तो ग्रामीण जीवन और कृषि-संस्कृति का महाकाव्य ही कहा जा सकता है। ग्रामीण जीवन का इतना सच्चा, व्यापक और प्रभावशाली चित्रण हिन्दी के किसी अन्य उपन्यास में नही हुआ है, संभवतः वह संसार के साहित्य में बेजोड़ है। "गोदान" में सामान्य जीवनधारा की अत्यंत सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। समाज के विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों की सामान्य जिन्दगी को उसकी सम्पूर्ण मार्मिकता में प्रस्तुत किया है। जिनकी पृष्ठभूमि में जीवन का गहरा और व्यापक अनुभव तथा तीव्र संवेदना विद्यमान है।

गोदान पर पहली सार्थक टिप्पणी जैनेन्द्र कुमार ने की थी। जैनेन्द्र कुमार जी अपने निबंध "प्रेमचन्द का गोदान यदि मैं लिखता" में प्रेमचन्द के सामने ही जैनेन्द्र ने उनकी आलोचना की और अपनी अलग रचनात्मक दृष्टि से गोदान को परखा। गोदान के चरित्र, कथानक विस्तार की बात कहकर उन्होंने प्रेमचन्द के कथानक में बिखराव की ओर महत्वपूर्ण संकेत किये है, वे कहते है कि प्रेमचन्द कई बार कथानक-विस्तार के लोभ का संवरण नहीं कर पाते, इससे कथानक की कसावट ढीली हो जाती है। विस्तार होने पर भाव कम हो जाता है। जैनेन्द्र जी कहते है है कि अगर मैं गोदान लिखता तो इसमें इतने पृष्ठ नही होते और न ही इतने ज्यादा पात्र/पात्रों की इतनी विपुल संख्या पर जैनेन्द्र जी को विस्मय होता है। गोदान में गाँव की कथा पर शहरी कथा के थोपे जाने की बात भी उन्होंने की है। प्रेमचन्द की भाषा, मुहावरे, वर्णन शैली पर जैनेन्द्र मुग्ध है। रामविलास शर्मा ने "प्रेमचन्द और उनका युग" में गोदान की मूल समस्या ऋण को बताया है। गोदान में और लोग भी कर्ज लेते है पर जिस तरह होरी कर्ज लेता है, उस तरह कोई और नही लेता। दूसरे बिन्दु के रूप में उन्होंने संयुक्त परिवारों के

टूटने को चिन्हित किया। गोदान के किसी पात्र को प्रेमचन्द का प्रतिनिधि नही कहा जा सकता, लेकिन अगर मेहता से होरी को जोड़ा जा सके, तो जो व्यक्ति बनेगा, वह बहुत कुछ प्रेमचन्द्र से मिलता-जुलता होगा। मेहता को उन्होंने यदि विचार दिए हैं, तो होरी बराबर परिश्रम करते रहने की दृढ़ इच्छा-शक्ति/डॉ. रामविलाम शर्मा ने प्रेमचन्द के साहित्य में निहित उपनिवेशवाद विरोधी चेतना को रेखांकित किया। इसी कड़ी में प्रेमचन्द की पत्नी शिवरानी देवी जी ने "प्रेमचन्द घर में" लिखती है कि जब मैंने गोदान को पढ़ा और होरी की मृत्यु की बात पढ़ी तो होरी की मौत पर मुझे रुलाई आ गयी। रोते-रोते हिचकियाँ बँध गयी। शिवरानी जी कहती है कि मैने पूछा- "आपने उस बेचारे को मारा क्यों? उस बेचारी धनियाँ को विधवा बना दिया। " मुझे भी यह बहुत बड़ा सवाल लगता है, पर उससे बड़ा ये कि होरी को मारते समय यही दर्द प्रेमचन्द जी को भी हुआ होगा, उनका हाथ जरूर काँपा होगा लिखते समय कितने सवाल गोदान को पढ़ते हुये उठते है। क्योंकि प्रेमचन्द जी के लिए भी आसान नहीं रहा होगा।

नन्ददुलारे वाजपेयी ने "प्रेमचन्द: एक साहित्यिक विवेचन" में प्रेमचन्द के मानवतावादी सेवाधर्म के आधार में किसी सुव्यवस्थित चिन्तन का अभाव दिखता है। इस सुव्यवस्थित चिन्तन को सुसम्बद्ध दर्शन समझना चाहिए। वैसे प्रेमचन्द ने अपनी दृष्टि के सन्दर्भ में कभी मानवतवादी सेवाधर्म का हवाला नहीं दिया है, जैसे आचार्य रामचन्द शुक्ल ने "लोकधर्म" या "लोकमंगल" की बात की है।

वाजपेयी जी का मानना है कि प्रेमचन्द ने अपने सेवाधर्म या निष्काम कर्मयोग का गम्भीर दार्शनिक विवेचन नहीं किया है। प्रेमचन्द की वर्णन क्षमता पाठक को तो भाव में बहा ले जाती है- पर चित्रण के अभाव में व्यक्ति (पात्र) को उसकी गहरी पहचान में नही उभार पाती। होरी पाठक में करुणा का संचार करता है, पर इस भाव संचार के पीछे बुद्धि के रेशम की डोर भी हो, तो भाव-संचार मार सकता है। उनका मानना है कि गोदान उपन्यास के ग्रामीण और नगरीय कथा में ऐक्य की कमी है वे लिखिते है- "गोदान के नागरिक और ग्रामीण पात्र एक बड़े मकान के दो खण्डों में रहने वाले दो परिवार के सामान है, जिनका एक-दूसरे के जीवन क्रम से बहुत कम सम्पर्क है। वे कभी-कभी आते-जाते मिल लेते हैं और कभी-कभी बात पर झगड़ा कर लेते हैं, परन्तु न तो उनके मिलने में और न झगड़े में ही कोई ऐसा संबंध स्थापित होता है, जिसे स्थायी कहा जा सके।" 'गोदान' विस्तार में न सही गहराई में यह उपन्यास युग का प्रतिनिधित्व करता है, उसमें भारतीय जीवन की करुणा होरी के रूप में साकार हो गई है। होरी मानो देश की वास्तविक स्थिति का प्रतिनिधि है। मेरी राय से गोदान तो केवल भारतीय कृषक की असहाय अवस्था दिखाकर समाप्त हो जाता है। प्रेमचन्द प्रत्यक्षवादी लेखक थे। प्रत्यक्षवादी से तात्पर्य है कि आज जो आपने समाचार पत्रों में पढ़ा कल उसे प्रेमचन्द की कहानियों में पढ़िए, प्रेमचन्द का लेखन सामजिकता की सीमा के बाहर नही जाता। इसी में नन्ददुलारे बाजपेयी जी कहते है- "समय ने प्रेमचन्द का साथ उतना नहीं दिया जितना प्रेमचन्द ने समय का साथ दिया है।" इन्द्रनाथ मदान जी कहते हैं कि गोदान में नगर-कथा इसका अभिन्न अंग नही है, बाहर की चीज है, मैल है, जिसे धोया जा सकता है। अपनी इस मान्यता के साथ उन्होंने नददुलारे वाजपेयी की मान्यता को दुहराया लेकिन बाद में इन्द्रनाथ मदान ने यह माना की देहात और शहर की कथा एक-दूसरे की पूरक है और उपन्यास की संरचना के मूल में हैं।

मीनाक्षी मुखर्जी गोदान कल्पना और यथार्थ में लिखती है कि गोदान उपन्यास में तीसरे दशक के मार्क्सवाद और उसकी विरोधाभासी स्थिति को गोबर के चरित्र के संबंध से देखा जा सकता है। उपन्यास में पाठक की सहानुभूति जड़ और श्रेणीबद्ध समाज को खत्म करने की बात करने वाले विद्रोही चरित्र गोबर के पक्ष में नहीं जाती वरन् भाग्य नियति और मरजाद की रक्षा करने वाले उसके पिता होरी के पक्ष में जाती है। इस प्रकार देखे तो गोदान में प्रेमचन्द, खन्ना जैसे पात्र का निर्माण करते हैं और उसके चरित्र द्वारा यह दर्शाते है कि कैसे पूँजी एक मनुष्य को अमानवीय बना देती है। बेलारी गाँव और होरी के परिवार के चारों ओर घूमती होरी की कथा एवं शहर की मण्डलियों और गोष्ठियों के इर्द-गिर्द घूमती मेहता और मालती की कथा के बीच का अन्तर वास्तविक और काल्पनिक का अन्तर है। मेरी नजर में गोदान ढहते हुए सामन्तवाद और उभरते हुए पूँजीवाद का व्याख्यान है, गोदान महाजनी दुश्चक्र में फँसे किसान की मजदूर बनने तक की प्रक्रिया का जीवित दस्तावेज है। यह एक यातनामय जिन्दगी से उबरने छटपटाहट और उससे उबर न पाने की विवशता की करुण कहानी है। यह परम्परा से सताई जा रही औरत की मुक्ति की आवाज है। गोदान के राय साहब देश भक्त भी है। वे कही भी और कभी भी होरी के सामने नही आते, किन्तु उसके खेत, घर, जमीन जायदाद सब कुछ नीलाम हो जाते हैं और सड़क की मजदूरी करते हुए वह मर जाता है प्रेमचन्द यहाँ इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाना चाहते है कि शोषण की मशीन पहले से अधिक धारदार और घातक हो गई है। प्रेमचन्द्र का यह निष्कर्ष बदले हुए सन्दर्भों में सौ फीसदी सही है। अंग्रेजी राज की व्यवस्था और उभरते हुए महाजनों के बारे में प्रेमचन्द ने दिखाया है कि हमारे राय साहब ताल्लुकेदार ज्वालामुखी के मुँह पर बैठे हुए हैं। उन पर लाखों रुपयों का कर्ज है, विलासिता का यहाँ साम्राज है, कहने को तो वे मालिक है, लेकिन उनकी कुँजी अब धीरे-धीरे खन्ना जैने बैंकरों के हाथ में है। प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में जमीदार को एक पतनोन्मुख शक्ति के रूप में चित्रित किया है, परन्तु महाजनों को कही भी कमजोर नही दिखाया उनकी बढ़ती हुई शक्ति का जिक्र किया है। पीढ़ियों की चेतना के फर्क और प्रेमचन्द की भविष्य-दृष्टि के संदर्भ में होरी और गोबर में दो जीवन-दृष्टियों का फर्क है। होरी संयुक्त परिवार की चेतना का व्यक्ति है, जबकि गोबर के जीवन में व्यक्तिवाद का प्रवेश होने लगा है। प्रेमचन्द ने बहुत सूक्ष्म तरीके से होरी और गोबर की चेतना में फर्क दिखाया है, हालाँकि होरी की ट्रेजडी उन्हें ज्यादा आकर्षित करती रही है। वास्तव में होरी समस्त भारतीय किसानों का प्रतिनिधि नहीं है, बल्कि एक ऐतिहासिक दौर में लुप्त होता हुआ, मिटता हुआ भारतीय किसान है। उसकी ट्रेजडी अनिवार्य है।

अन्ततः हम देखते हैं गोदान हिन्दी कथा-साहित्य का एक ऐसा उपन्यास है, जिसको लेकर हिन्दी आलोचना में बाद-विवाद और चर्चा का माहौल बराबर बना रहा। कई दृष्टियों से इस उपन्यास को परखने की कोशिश हुई। समकालीन विमर्श के तहत इस पर दलित और स्त्री दृष्टिकोण में भी विचार हुआ। मार्क्सवादी और गैर- मार्क्सवादी दोनो धारा के आलोचकों ने अपनी राय इस पर जाहिर की। गोदान अपने आप में अमर रचना है, जो समय के धूल से धूमिल नहीं हुई और जीवन के समग्रता को अपने में समेटे हुए है।

**********

संदर्भ सूची:-

1- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 359
2- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह, पृष्ठ 377
3- हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, पृष्ठ 561
4- गोदान एक पुनर्विचार - जैनेन्द्र कुमार, पृष्ठ 13-14
5- प्रेमचन्द और उनका युग - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन
6- प्रेमचन्द घर में - शिवरानी देवी पृष्ठ 238